ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II | ISSUE-II | Feb. | 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना भाव

डॉ.गुलाब राठोड

हिन्दी विभाग,

कर्नाटक विश्वविद्यालय

धारवाड

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित तथा आधुनिक मीरा के नाम से मशहूर महादेवी वर्मा का जन्म सन् १९०७ में उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में एक प्रतिष्ठित कार्यस्थ परिवार में हुआ था । इनके पिता श्री. गोविंदप्रसाद वर्मा और माता हेमरानी देवी दोनों ही शिक्षा प्रेमी थे । तात्पर्य यह कि शिक्षित वातावरण में आस्तिकता के संस्कार उन्हें अपने घर से ही मिले है । अल्पवय में ही विवाहित हो जाने पर उन्होंने आरंभिक शिक्षा घर पर ही ग्रहण की । इसके बाद की शिक्षा विधिवत प्रयाग में हुई, जहॉ उन्होंने सन् १९३३ में दर्शनशास्त्र में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की । ये आरंभ मे ब्रजभाषा में कविता लिखती थी,बाद में खडीबोली मे लिखने लगी और शीघ्र ही इस क्षेत्र में इन्होंने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया । ये एक कुशल चित्रकार भी थी । इसलिए इनकी कविताओं में चित्रों जैसी संरचना का अभास प्राय: मिलता है ।

छायावाद युग में इनके चार काव्य संग्रह प्रकाशित हुए है । "निहार" (१९३०),"रश्मि" (१९३२)"नीरजा"(१९३५)और १९४० में "यामा" में प्रकाशित हुई । "यामा"पर उन्हें "मंगला प्रसाद पारितोषक " मिला था । साथ–ही–साथ "भारतीय ज्ञानपीठ"सम्मान से भी पुरस्कार किया गया । काव्य के साथ–साथ आधुनिक गद्य को भी महादेवी जी की अनूठी देन है । इन्होंने "अतीत के चलचित्र", "स्मृती की रेखाऍं", "श्रंखला की कडियॉं", "पथ के साथी" आदि है । महादेवी वर्मा पर बुध्द की करूणा एवं दु:खवाद तथा स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ के दार्शनिक विचारों का गहरा प्रभाव पडा है । इसी कारण उनके काव्य में परमतत्व, प्रकृतितत्व और आत्मतत्व की प्रधानता रही है ।

महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तंभों में से एक है । उनके काव्य मे रहस्यवादी स्वर प्रबल रहा है । साथ –ही–साथ वेदना और करूणा की अभिव्यक्ति भी उनके काव्य में प्रमुखता से हुई है । प्राय: वेदना और करूणा की प्रधानता के कारण ही महादेवी वर्मा जी को "आधुनक मीरा " कहा जाता है ।

अज्ञात प्रियतम के प्रति विरहवेदना की भावना के कारण ही उनके काव्य में रहस्यवाद की प्रमुखता है। उनकी कृतियॉ—नीहार,रश्मि,नीरजा,सांध्यगीत एवं दीपशिखा में सर्वत्र वेदना व्याप्त है । विरह प्रेम का उदात्त स्वरूप है तथा प्रेम की कसौटी है । कबीर की विरहणी आत्मा इसी का सम्बल लिए हुए प्रियतम से मिलन को अधीर है तो यही विरह मीरा का सर्वस्व बनकर उस कृष्ण के प्रेम में दीवाना बना रहा है । धन्यवाद के काव्य में यहीं प्रेम सुजान के प्रति विरहभाव के रूप में दिखाई देता है तो यही विरह "ऑसू"बनकर प्रसाद की ऑखों से बरस रहा है । इसी विरह वेदना ने महादेवी जी को व्यग्र बनाकर उन्हे अपनी तुलना —

"मैं नीर भरी भरी दु:ख की बदली

विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल थी मिट आज चली ।"

से करने को विवश कर दिया है । इनकी विरहानुभूति अत्यंत उन्नत एवं उत्कृष्ट है,जिसमें प्रेम का आवेग है,वेदना की तीव्रता है और व्यक्ति चित्त की मनोदशाओं का निरूपण है । महादेवी जी की मान्यता है—"दु:ख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एकसूत्र मे बांधकर रखने की क्षमता रखता हैं । मनुष्य सुख को अकेले भोगना चाहकता है,किन्तु दू:ख सबको बॉटकर विश्व जीवन में अपने जीवन को,विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना चाहता है,जिस प्रकार एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है।"

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम वेदना की गहनता सर्वत्र विद्यमान है । वेदना उन्हें इतनी प्रिय है कि वे उसका साथ नही छोडना चाहती है, क्योकि कइसी वेदना के माध्यम से उन्होंने सर्वशक्तिमान चेतनामय ईश्वर का दर्शन किया है। साथ—ही—साथ विरह की तीर्वानुभूति के कारण इनके काव्य में करूण की प्रधानता भी दिखाई पडती है । इनके ह्रदय मे वेदना की कोमल भावनाओं के साथ—साथ नारी ह्रदय की स्वाभाविक सात्विकता भी समाहित है। उनके गीतों की प्रेम वेदना में न व्देष है,न घृणा है,न कटुता है,न प्रतिकार । यदि है तो केवल वेदना,जिसमें उनका अपना नही,बल्कि समस्त मानव जाति का असीम शोक समाया हुआ है । उनकी करूणा पुकार में नारी ह्रदय की वेदना का स्पष्ट अंकन दीख पडता है ।

महादेवी वर्मा लिखती है –

"जो तुम ओ जात ऐ बार ।

किनी करूणा कितने सन्देश पथ में बिछ जाते बन पराग,

गाता प्राणों का तार–तार अनुराग भरा उन्माद राग,

ऑसू लेते वे पद पखार । "

महादेवी प्रणय की साधिका है, उनकी प्रणय भावना आध्यात्मिक है । उनकी प्रणय भावना में आस्था, सच्चा विश्वास,निजी अनुभूति का आधार है । ये मीरा के समान ही आरंभ से अंत तक अपने अलौंकिक प्रियतम की उपासिका बनी रही है । महादेवी वर्माने परमात्मा की साधना करते हुए जीवन का प्रकटीकरण भी किया है । उनके काव्य में आध्यात्मिकता के साथ–साथ भक्ति भाव भी मुखरित हुआ है । भक्ति भाव से पूजा–अर्चना करने के लिए देव की प्रतिमा के शृंगार की सारी सामग्री सजा कर वे पूजा–अर्चना में लीन हो जाती है । हॉ,सामग्री का रूप सामान्य भक्त की सामग्री से भिन्न है,किन्तु पुजा का भाव वही है । महादेवी वर्मा लिखती है –

"क्या पूजा क्या अर्चन रे ?

उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे ।

मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिंय का अभिनन्दन रे । "

महादेवी वर्मा का इस पूजा–अर्चना में पार्थिवता नही है,किन्तु तन्मयता वही है जो एक भक्त में होती है । इसलिए यह कहा जा सकता है कि महादेवी के काव्य में उपलब्ध वेदना भक्ति की तन्मयता से परिपूर्ण है ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महादेवी की विरहानुभूति में गहन प्रेम वेदना का तत्व व्याप्त है । वे करूणा से ओतप्रोत विरह की ऐसी कवियित्री है जो अज्ञात प्रियतम की खोज में लीन है । उनके विरह में आध्यात्मिकता,पावनता,सात्विकता एवं उदात्तता है । यह विरह वेदना,मौन,नीरव तथा एकाकी

है । सचमुच ही महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना का सागर लहरा रहा है ,जो अनेक करत्नों से भरा हुआ है । वे वेदना की सामग्री कही जा सकती है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. नामदेव उतकर – हिन्दी साकिहत्य की युगीन प्रवृत्तियॉ– पृ.सं. २५०–२५१

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com